Class – B.A – I (Honours)
Paper – I

Name of the Guest Teacher – Khushbu Kumari
dept. of Political science, V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, LNMU

Topic – राज्य की प्रकृति के आंगिक सिद्धांत

आंगिक सिद्धांत के अन्तर्गत राज्य को शरीर का स्वरूप माना गया है। इस सिद्धांत के अनुसार जिस प्रकार के विभिन्न अंग शरीर में होते हैं और वह उनसे मिलकर बनता है उसी प्रकार राज्य के विभिन्न अंग होते हैं और वह उनसे मिलकर बनता है।
गार्नर के अनुसार, "आंगिक सिद्धांत एक प्राणिवैज्ञानिक धारणा है जो राज्य को जीवधारी व्यक्ति मानता है, उसको निर्माण करने वाले व्यक्तियों को जीवधारी शरीर के कोष्ठों के समान समझता है और राज्य तथा व्यक्ति के बीच ठीक उसी प्रकार के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध की कल्पना करता है जैसा सम्बन्ध शरीर और उसके अंगों के बीच होता है।"

सिद्धांत का विकास :-

आंगिक सिद्धांत उतना ही पुराना है जितना कि राजनीतिक विचारधारा। प्लेटो ने राज्य को एक वृहत् आकार का मनुष्य बतलाकर व्यक्ति तथा राज्य के बीच पूर्ण सादृश्य स्थापित किया है। उसने समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया है – शासक, सैनिक योद्धा तथा श्रमिक और इस विभाजन का आधार मानव आत्मा के तीन गुण — बुद्धि, साहस तथा इन्द्रिय तृष्णा – माना है। अरस्तू ने भी

Page No. ____
Date ____

राज्य तथा उसके नागरिकों की तुलना शरीर तथा उसके अंगों से की है। मध्य युग में भी कई विद्वानों ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

19वी सदी के प्रारम्भ में राज्य की उत्पत्ति के संबंध में सामाजिक समझौता सिद्धांत का ह्रास होने के साथ ही आंगिक सिद्धांत को नवीन अभिव्यक्ति प्राप्त हुई। 19वी सदी के विचारकों ने राज्य को जीवधारी या मानव शरीर ही माना। विस्तार के साथ इस प्रकार की धारणा का प्रतिपादन किया गया और उस काल में राज्य रूपी शरीर के साथ पोषक व्यवस्था, परिचालन व्यवस्था आदि गुण भी जोड़ दिये गये।

हर्बर्ट स्पेन्सर का आंगिक सिद्धांत :—

आंगिक सिद्धांत का सबसे विस्तार से विवेचन इंग्लैण्ड के विचारक स्पेन्सर ने किया है। उसने राज्य और व्यक्ति के बीच सूक्ष्म रूपक बांधते हुए यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि राज्य या समाज एक प्राकृतिक जीवित शरीर है जो अन्य जीवधारियों से किसी भी तरह भिन्न नहीं है। उसने राज्य और शरीर के बीच निम्नलिखित समानताएं बतलायी हैं—

(1) रचना - जिस प्रकार शरीर की रचना रक्त, मांस, हड्डी आदि से होती है, उसी प्रकार राज्य भी व्यक्तियों से मिलकर बना है।

(2) जन्म — प्राणी शरीर तथा राज्य दोनों का ही जन्म जीवाणुओं के रूप में प्रारम्भ होता है।

(3) विकास — जीवधारी और राज्य दोनों की वृद्धि और विकास का क्रम एक-सा ही है। जिस प्रकार जीव और शरीर साधारणतया समानता से भिन्नता तथा जटिलता की ओर बढ़ते चलते हैं, उसी प्रकार राज्य भी एक साधारण तथा प्राकृतिक अवस्था से धीरे-धीरे विकसित होकर आधुनिक रूप प्राप्त कर सका है।

(4) परस्पर निर्भरता — जीवधारी शरीर और राज्य दोनों में ही अन्तर-निर्भरता पायी जाती है। जिस प्रकार एक अंग के निर्बल और बीमार हो जाने का प्रभाव सम्पूर्ण शरीर पर पड़ता है, उसी प्रकार राज्य का स्वास्थ्य और बल तथा उसकी समृद्धि भी उस राज्य के व्यक्तियों और वर्गों पर निर्भर करती है।

(5) संगठन — शरीर तथा राज्य का संगठन भी एक ही प्रकार का होता है। शरीर के तीन भाग होते हैं — जीवन प्रणाली, विभाजन प्रणाली और विनिमय प्रणाली। इस प्रकार की तीनों प्रणालियों पर मस्तिष्क अपना पूर्ण नियंत्रण रखता है। शरीर का मुख्य अंग भी है। राज्य का संगठन भी इसी प्रकार का है। राज्य में भी जीवन प्रणाली के अनुसार उत्पादन क्रिया, विभाजन प्रणाली के अनुसार यातायात एवं संवादवाहन के साधन तथा मस्तिष्क के समान सरकार होती है।

(6) विनाश क्रम — जिस प्रकार जीव शरीर नाशवान होता है और उसका निरन्तर

विनाश होता रहता है उसी प्रकार राज्य में वृद्ध और बीमार व्यक्ति मरते रहते हैं तथा उनके स्थान पर नवीन व्यक्ति जन्म लेते रहते हैं।

असमानताएं :-

1. पारस्परिक निर्भरता की सीमा में भेद — जीव रूपी शरीर के अंग यदि एक-दूसरे से या शरीर से अलग हो जाएं तो उनका कोई अस्तित्व नहीं रहता, लेकिन यदि राज्य के अंग अलग कर दिये जाएं तो भी उनका महत्व बना रहता है।

2. चेतना शक्ति का भेद — शरीर के अन्तर्गत समस्त चेतना शक्ति मस्तिष्क में केन्द्रित होती है और शरीर के अंगों की अपनी कोई पृथक् चेतना नहीं होती, किन्तु राज्य में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पृथक्-पृथक् चेतना शक्ति होती है जो दूसरों से पूर्णतया स्वतंत्र होती है।

इन असमानताओं के आधार पर स्पेन्सर ने यह निष्कर्ष निकाला कि समाज में प्रत्येक के कल्याण की बात सोची जाती है और समाज का अस्तित्व अपने सदस्यों के कल्याण हेतु ही होता है। समाज के सदस्य इसके कल्याण का साधन मात्र नहीं हो सकते हैं। स्पेन्सर के व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का यही केन्द्रीय भाव है।